विचार बिन्दु

पछतावा हृदय की वेदना है और निर्मल जीवन का उदय। –शेक्सपियर

पूंजीवादी व्यवस्था में नया पनप रहा डिजिटल सामंतवाद

नई डिजिटल तकनीकी क्रांति के प्रभाव से वैश्विक पूंजीवाद के भीतर हो रहे परिवर्तनों को समझने के लिए विशेषज्ञ लगे हुए हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि 'एल्गोरिद्म पूंजीवाद', 'संज्ञानात्मक पूंजीवाद', 'संचार पूंजीवाद', 'डेटा पूंजीवाद', 'डिजिटल पूंजीवाद', 'प्रतिरोधहीन पूंजीवाद', 'सूचनात्मक पूंजीवाद', 'प्लेटफ़ॉर्म पूंजीवाद', 'अर्द्ध-पूंजीवाद', 'नियंत्रक पूंजीवाद' और 'आभासी पूंजीवाद' जैसे कुछ नाम और विशेषण अनेक विशेषज्ञों ने और कुछ मसखरों ने दे भी डाले हैं। हाल ही में पूंजीवाद के वर्गीकरण की जो नई अवधारणा प्रस्तुत की गई है वह उसके प्रचलित अर्थों को पीछे छोड़ देती है। यह नयी अवधारणा पूंजीवाद से आगे की भावना वाली नहीं है। फिलहाल तो इसे डेटा की पूंजी बनाने वालों और अंतर्जाल – नेट – पर जानकारियां हासिल करने वाले उपयोगकर्ताओं की दुनिया के लिए एक प्रतिगामी कदम के रूप में ही देखा जा रहा है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि वाम और दक्षिण दोनों पंथों के लिए 'डिजिटल सामंतवाद', 'तकनीकी-सामंतवाद', 'सूचना सामंतवाद', 'नव-सामंतवाद' नये संकेत शब्द बन गए हैं। अकादमिक तथा बुद्धिजीवी लोग मानते हैं कि डिजिटल अर्थव्यवस्था के सबसे उन्नत क्षेत्रों की अवधारणा को अभी ठीक-ठीक समझना बाकी है। इसमें वामपंथियों के सबसे प्रतिभाशाली दिमाग वाले दिग्गज भी अभी अंधेरे में ही भटक रहे हैं कि इसे कैसे समझा जाय और कैसे लिया जाय! उनके सामने मुश्किल यह है कि गूगल, अमेजॉन, और फ़ेसबुक जैसे विराट सूचना-तकनीकी प्लेटफॉर्म जो पुराने जमाने के श्रमिकों के पूंजीवादी शोषण की तरह अपना मुनाफा नहीं बनाते हैं, तो क्या उन्हें जमींदारी के नए मॉडल के रूप में देखा जाना चाहिए, ऐसे गैर-उत्पादक मालिक के रूप में, जो अपने नेटवर्क-प्रभुत्व और एकाधिकार की पकड़ का लाभ उठाते हुए पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में किसी और जगह से उत्पन्न विज्ञापन से आय पाने के लिए 'डेटा-सेट' और 'एल्गोरिद्म' पर निर्भर करते है? या वे एल्गोरिद्म निगरानी के जरिये उपयोगकर्ता के डेटा को संकलित करने और उन्हें उड़ा ले जाने से अमीर बन रहे हैं? बेदखल करके संठाह करने की पुरानी प्रवत्ति की ही भांति क्या यह डिजिटल बेदखली नहीं है?

यह भी स्पष्ट दिखाई देता है कि इक्कीसवीं सदी के तकनीकी दिग्गजों ने सूचना और ज्ञान पर अपने नियंत्रण अर्थात 'बौद्धिक एकाधिकार' से हमें प्रभावी ढंग से अपने अधीन कर लिया है और अब वे उत्पादन प्रक्रिया में शामिल हुए बिना भी बड़ी खूबसूरती से 'सरप्लस मूल्य' हासिल कर लेते है। इसे समझने के लिए गूगल का उदाहरण लिया जा सकता है। डेटा एकत्र करने पर गूगल के एकाधिकार का व्यवसाय मॉडल काफी हद तक किसी वस्तु के उत्पादन पर निर्भर करता है और वह है 'खोज परिणाम' यानी 'सर्च रिज़ल्ट' या यूं कहें कि 'मानव ज्ञान के विशाल भंडार तक वास्तविक समय में पहुंच'। गूगल इसे 'मुफ़्त' उपलब्ध कराता है ताकि वह विज्ञापनदाताओं को अपने उपयोगकर्ताओं तक लक्षित पहुंच देने की बिक्री कर सके। किन्तु इसे क्लासिकल बौद्धिक एकाधिकार नहीं कह सकते क्योंकि जिन वेब पेजों को गूगल क्रमबद्ध करता है वे उनके बनाने वालों की अमूर्त संपत्ति बनी रहती है। उन्हें वास्तव में तो अपनी संपत्ति के उपयोग करने वाले गूगल से किसी भी लाइसेंस शुल्क पाने का अधिकार छोड़ना पड़ता है। इसी पृष्ठभूमि में अब वैचारिक जगत में इस बात पर बहस शुरू हुई है कि हमारा आधुनिक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र तेजी से एक सामंती शक्ति के रूप में संगठित हो रहा है और वह हमारी मौजूदा शक्ति संरचनाओं और स्वतंत्रता को चुनौती देने लगा है।

सामंतवाद की सामान्य अवधारणा यह है कि स्वामित्व वाला एक अपेक्षाकृत छोटा वर्ग उत्पादक वर्ग से काम लेकर बिना कुछ किए धरे मुनाफा कमाता है। इसके लिए यह वर्ग विभिन्न प्रकार की परोक्ष और अपरोक्ष रूप से राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं का उपयोग करता है। दूसरी तरफ उत्पादक वर्ग के पास आम तौर पर बहुत कम विकल्प होते हैं और वह प्रभावशील नहीं होता है। डिजिटल जगत में उपयोगकर्ता ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करते हैं तब उन्हें अक्सर पता ही नहीं होता कि ऐसा करते हुए वे अपने कितने डेटा प्लेटफ़ॉर्म चलाने वालों के साथ साझा कर दे रहे होते हैं। इन डेटा का उपयोग प्लेटफ़ॉर्म के मालिक अपने लिए मूल्य पैदा करने के लिए करते हैं। हमारे वर्तमान डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र और सामंती समाजों के बीच इतनी अधिक समानताएं हैं कि यह बेहिचक कहा जा सकता है कि डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र, विशेष रूप से सोशल मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र, एक वास्तविक सामंती समाज विकसित कर रहा है। आधुनिक सोशल मीडिया और उसके डेटा विज्ञान का पारिस्थितिकी तंत्र सामंती सामाज और आर्थिक व्यवस्था के ढांचे की ही झलक देता हैं। पुराने सामंती ज़माने में किसान-मजदूर लोग खेती, पशुपालन और कारखानों में अपने श्रम का समर्पण करते थे। अब इस नई प्रणाली में डेटा उत्पादन और समर्पण का काम होता है। इस प्रणाली के स्वामी टेक कंपनियों के संचालक होते हैं। इसीलिए यह भी माना जा रहा है कि यह संपूर्ण बुनियादी ढांचा उपयोगकर्ता के डेटा का संग्रह करने और उसके शोषण पर खड़ा है।

आधुनिक इंटरनेट के साथ यह चेतावनी हमेशा होती है कि जो कुछ भी ऑर्डर किया जाता हैं या कहा जाता हैं, उसे कोई ट्रैक करेगा, चाहे वह किसी के जीवन के लिए कितना भी आवश्यक क्यों न हो। नेट के उपयोगकर्ता के पास यह विकल्प ही नहीं बच रहा है कि वह उसमें शामिल न हों।

बाज़ार की ताकतें दावा करती हैं कि सोशल मीडिया में तो ;स्वैच्छिक भागीदारी; या सहमति होती है। यहां कोई किसी को मजबूर नहीं करता जैसे पुराने जमाने में जमींदार करते थे। डेटा साइंस और सोशल मीडिया इकोसिस्टम पर चर्चा करने वाले किसी भी व्यक्ति के सामने अनिवार्य रूप से यही तर्क रखा जाता है कि सोशल मीडिया में तो भागीदारी स्वैच्छिक है।

फौरी तौर पर देखने पर यह एक प्रभावी तर्क लगता है। लेकिन यह भी सभी जानते हैं कि सामान्यत: सहमति टूटती है और आधुनिक डिजिटल डेटा व्यवस्था में आम भागीदार की निजता कोई महत्व नहीं रखती। इसलिए नई प्रौद्योगिकी जनित डिजिटल मीडिया में राजनीति, नैतिकता और मूल्यों के अंतरसंबंधों की भी बड़ी समस्या है। डेटा की साझेदारी की सहमति को मध्ययुगीन किसानों के ;स्वेच्छा से; अपना श्रम देने के समान ही देखा जा सकता है। वहां स्वेच्छा नहीं थी, मजबूरी थी। आज भी खुद का डेटा देने के लिए एक तरह से बाध्यता ही है। उपयोगकर्ता की जानकारी पाने के लिये उसे अपना डेटा सौंपने के लिए क्लिक करवा ही लिया जाता है। हालांकि मध्ययुगीन समाज की तुलना में आधुनिक समाज में हालत वैसी क्रूर नहीं है जैसे जागीरदारों के आतंकी काल में होती थी। अब लगभग सभी व्यक्तिगत और व्यावसायिक संचार डिजिटल होने लगे हैं, उनमें शामिल न होने की छूट होती है किन्तु ऐसा करने से इनकार करने वाला उस व्यवस्था से बाहर हो जाता हैं। समकालीन समाज में यह लगभग असंभव है कि कोई डिजिटल व्यवस्था में भागीदारी न करने का विकल्प चुने। क्योंकि सरकारें भी आम नागरिक से संपर्क डिजिटल मंच पर करने लगी हैं।

संदेश भेजने और सूचनाएं पाने के डिजिटल मंच तो अब जीवन की जरूरत बन गये हैं। अब तो सरकारी नौकरियों के लिए तथा शिक्षण संस्थानों में आवेदन भी ऑनलाइन ही करने पड़ते हैं। इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि कई विकलांग और अन्य व्यक्तियों के लिए, डिजिटल जरिया ही एकमात्र विकल्प है, जो उन्हें मजबूरन पूर्ण समर्पण की ओर ही धकेलता है। आधुनिक इंटरनेट के साथ यह चेतावनी हमेशा होती है कि जो कुछ भी ऑर्डर किया जाता हैं या कहा जाता हैं, उसे कोई ट्रैक करेगा, चाहे वह किसी के जीवन के लिए कितना भी आवश्यक क्यों न हो। नेट के उपयोगकर्ता के पास यह विकल्प ही नहीं बच रहा है कि वह उसमें शामिल न हों। भागीदारी के संदर्भ में, मध्ययुगीन सामंतवाद और डिजिटल सामंतवाद के बीच सिर्फ यही अंतर है कि कोई भी व्यक्ति अब केवल एक मंच के साथ बंधा नहीं है। इसके बजाय, प्रत्येक व्यक्ति के पास विभिन्न डिजिटल प्रबंधकों के लिए उसके दायित्वों का एक जाल होता है, जिनमें से प्रत्येक उपयोग के बदले में अलग-अलग डेटा की मांग होती है जिसे पूरी करनी पड़ती है। जिन लोगों के गोपनीयता से सरोकार हैं, उनके लिए सवाल यह है कि वे अपने कितने डेटा को सरेंडर करने के लिए तैयार हैं और क्या उनका व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन उनके निर्णयों के अनुकूल है।

परंपरागत रूप से, जब कर्मचारी काम कर रहे होते हैं तब उनका समय उनका अपना नहीं होता है, और उसके नियोक्ता को उसके सामान्य कार्यक्रम, उसकी उत्पादन क्षमता और कार्य शैली के बारे में सब पता होता है। लेकिन अब नियोक्ता के अलावा एक अन्य तीसरे-पक्ष या कंपनी को भी उन सभी चीज़ों की जानकारी होती है, और वे आपके डेटा को अन्य कंपनियों से एकत्रित किए गये डेटा के साथ साझा कर सकते हैं। किसी कर्मचारी का समय और कार्य आउटपुट उसके नियोक्ता से संबंधित तो हो सकता है, लेकिन अब कोई और कंपनी भी उनका उपयोग करती है। व्यावसायिक वातावरण में क्लाउड-आधारित सेवाओं से यह नई स्थिति बन गई है। पहले के संप्रभु डिजिटल वातावरण में स्थानीय कॉर्पोरेट सर्वर के पास डेटा भंडारण के दायित्व और अधिकार होते थे मगर अब इन दायित्वों तथा अधिकारों का उपयोग तीसरा पक्ष करता है। यह भी सच है कि कई मामलों में, आपका नियोक्ता ठीक उसी स्थिति में हो सकता है जैसे आप अपने डेटा को सौंपने के मामले में हैं। अब तो 'ऑफिस 365' जैसी क्लाउड-आधारित सेवाएं व्यवसायों को आक्रामक रूप से अपनी तरफ खींच रही हैं जिसमें उपयोगकर्ता का निर्णय कोई मायने नहीं रखता। डेटा संग्रहण कंपनियां जोर देती हैं कि किसी एक व्यक्ति के डेटा का कोई सार्थक मूल्य नहीं है। उनका मूल्य कुल मिलाकर बनाता है। इस 'ब्लाइंड स्पॉट' का फायदा उठाया जाता है। व्यक्तिगत डेटा कार्यात्मक रूप से किसी काम का नहीं हो लेकिन कुल डेटा बड़ी कंपनियों के मूल्यांकन को बनाए रखने के लिए पर्याप्त होता है। यही डिजिटल सामंतवाद है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

बाँझ पोस्टमार्टम : आहत मातृत्व

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

चीरघर की ओर शवपरीक्षा (पोस्टमार्टम) के लिए जाते हुए फोरेन्सिक विभाग प्रमुख ज्यूरिस्ट डॉ. लाट ने अपने सहयोगी से पूछा, 'क्या केस है?' 'जी एल्यूमीनियम फोसफाइड पोइजनिंग का' सहयोगी डॉक्टर ने उत्तर दिया।

'आत्महत्या ?' मन-ही-मन सोचते हुए डॉ. लाट ने संक्षिप्त सवाल किया । उन्हें ध्यान आया कि एल्यूमीनियम फोसफाइड नामक इस कीटनाशक से होने वाली यह तीसवीं मौत है जिसका पोस्टमार्टम वे करने जा रहे हैं। तीस मौत और वे भी केवल एक साल के दौरान।

'जी, आत्महत्या' सहयोगी डॉक्टर से अपने प्रश्न का उत्तर सुनकर सोच में डूबे डॉक्टर लाट कुछ चौंके। वे लंबे समय से इस पद पर काम कर रहे हैं लकिन उन्होंने जहर खाकर मरने वालों की इतनी संख्या एक साल में कभी नहीं देखी। इस कीटनाशक को खाकर तो काई भी नहीं बचा। तो क्या उस नए कीटनाशक के कारण ही इतनी मौतें हो रही हैं? इसी कीटनाशक को खाकर इतने लोग मरे हैं, इसका मतलब है यह सरलता से सुलभ है। अगर यह कीटनाशक इतना खरतनाक जहर है तो इसकी बिक्री पर रोकथाम क्यों नहीं है?

उन्होंने इस विषय में अधिकारियों का ध्यान भी दिलाया था। स्वयं खुद भी कलक्टर आदि से मिले थे। लेकिन किसी ने भी इसे गंभीरता से नहीं लिया। वरन् कुछ ने तो कहा जिसे आत्महत्या करनी है वह यह नहीं तो कोई और जहर खाएगा, या और कुछ करेगा। लेकिन डॉ. लाट जानते थे कि हर जहर खाने वाला आत्महत्या नहीं करना चाहता। भावावेश में अनेक ऐसा कर बैठते हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे मरना चाहते हैं। खतरनाक जहर का घरों में सहज उपलब्ध होना डॉक्टर लाट के ख्याल से ठीक नहीं था। उन्होंने प्रश्न पूछकर सहयोगी डॉक्टर से मृत स्त्री के आत्महत्या करने का कारण जानना चाहा।

उत्तर तीसरे डॉक्टर ने दिया। "जी, बाँझपन को लेकर पति-पत्नि में कहा-सुनी हुई थी। शादी को सात साल हो चुके थे। घर के सभी लोग इसके लिए पत्नी को दोषी मानते थे। पति दूसरी शादी करना चाहता था और इसीलिए चाहता था कि पत्नी छोड़कर चली जाए। तकरार के समय सामने अलमारी में कीटनाशक गोलियाँ रखी थीं, बस, तैश में आकर उसने डब्बी खोली और गोली खा ली।"

महिला को जब वार्ड में लाया गया था वह बिलकुल होश में थी। उसे खूब प्यास लग रही थी। कुछ साँस भी उखड़ी हुई थी। सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट उस महिला को उस समय देखकर कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि वह कुछ ही समय की मेहमान है। करने को सभी कुछ किया गया लेकिन जैसा कि डॉक्टर अनुभव से जानते थे, उस जहर में किसी दवा का कुछ असर नहीं होता। गोली पेट में जाते ही तीव्र गति से जहरीली गैस पैदा करती है जो शीघ्र ही सारे शरीर में फैल जाती है। और फिर कोई ऐसी दवा नहीं जो जहर खत्म कर सके। जहर का कोई एन्टीडोट उपलब्ध नहीं था।

महिला का कुछ समय बाद रक्तचाप गिरना शुरू हुआ तो किसी दवा से ऊपर नहीं उठा। बेहोशी आई और देखते-देखते दो घंटे में सब खत्म हो गया।

चीरघर के पास लोग डॉक्टर को आता देख उठ खड़े हुए थे। कुछ लोगों ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। इन बुझे चेहरे, मासूम और चुप बैठे लोगों में पति कौन था, कहना मुश्किल था।

हाथ के कागज पेन नीचे कर दारोगा और साथ के सिपाही ने सलाम की तो डॉ. लाट ने पूछा, 'क्या, शुरू करें?'

'जी हाँ' दारोगा ने कहा। 'शिनाख्त करवा ली है। पंचनामा भी करीब-करीब पूरा हो गया है। आप शुरू करें सर, वरना शाम हो जाएगी।'

चीरफाड़ करने वाले कर्मचारी ने डॉक्टरों के अंदर घुसने के बाद स्वयं अंदर आकर दरवाजा बंद कर लिया। यहां बनी गैलरी में खड़े होकर डॉक्टरी पढ़ने वाले छात्र शव-परीक्षा देखते हैं।

नीचे टेबल पर शव पड़ा था। इशारा पाकर लाश पर से चादर हटा दी गई। डॉ. लाट ने अपने सहयोगी को लिखाना शुरू किया, "शरीर सुगढ़, अच्छी कदकाठी, पोषण अच्छा, अंग सब ठीक, स्तनों का उभार अच्छा, यौन परिपक्वता के लक्षण मौजूद, रंग गोरा, ओठ हलके नीले, नाखूनों पर नीलापन नहीं, नाक मुँह में झाग नहीं, बाहरी कोई चोट नहीं।"

कुछ रूककर उन्होंने लाश की पीठ दिखाने को कहा। कर्मचारी ने अभ्यस्त हाथों से पलटकर लाश की पीठ दिखाई और साथ ही उसके हाथ-पाँव मोड़कर दिखाए।

डॉ. लाट ने लिखाया, "मरणोत्तर जमा होने वाला खून नहीं, मरणोत्तर शारीरिक ऐठन नहीं।"

उनके चुप होते ही कर्मचारी ने हाथ में चाकू उठा लिया और इशारा पाते ही एक लम्बा नश्तर ठुड्डी से जनेंद्रियों तक लगा दिया। अपने सधे हाथों से कर्मचारी अपना कार्य करने में व्यस्त हो गया।

डॉक्टर लाट ने अपने सहयोगी से पूछा, 'कितनी गोलियाँ खाई थी ?'

'जी, सिर्फ एक' सहयोगी ने उत्तर दिया। किसी बात पर नाराज होकर इसके पति ने 'बाँझ, कुशगुनी' का ताना दिया था इसी को लेकर कहा-सुनी हुई और इसने तैश में आकर पास पड़ी कीटनाशक की डब्बी उठा ली। पति कहता है कि 'उसने छीना तब तक तो वह खोलकर एक गोली गटक चुकी थी। अस्पताल भी जल्दी ही ले आए थे। अस्पताल में भी करने को सभी कुछ किया लेकिन......'

बीच में ही दूसरे डॉक्टर ने कहा, "एल्यूमीनियम फोसफाइड खाकर आज तक तो कोई बचा नहीं साहब। बहुत ही खतरनाक जहर है। किसी दवा का असर ही नहीं होता।"

"सर एल्यूमीनियम फोसफाइड का प्रचलन घरेलू कीटनाशक के रूप में बंद होना चाहिए।" पहले डॉक्टर ने जोड़ा। "जब से कंपनी ने घरेलू कीटनाशक के रूप में इसका विज्ञापन किया है और बिक्री बढ़ाई है, तभी से यह मौतें शुरू हुई हैं और सब तो....."

"हाँ, इस साल की तो यह तीसवीं मौत है" डॉ. लाट ने बीच ही में कहा, "कुछ करना पड़ेगा। कलेक्टर और यहाँ के अधिकारियों से बात करने से कुछ हुआ नहीं।"

तभी पसलियाँ काटकर कर्मचारी सीना खोल चुका था। डॉ. लाट उतरकर पास आ गए। फेफड़े दिखाए गए, कुछ नहीं था। हृदय दिखाया गया, उसमें भी विशेष कुछ नहीं था, जो हालत थी वह डॉ. लाट ने लिखा दी।

पेट खोला गया। आमाशय, यकृत, प्लीहा, गुर्दा, एक-एक कर सब अंगों को देखा गया, डॉ. लाट देखते रहे, जरूरत के अंगों के टुकड़े जाँच के लिए रखे गए। पेट की सभी शिराएँ खून से खूब भरी हुई थीं और खूब फैली हुई थीं। इसके अलावा किसी भी अंग में और कुछ भी नहीं मिला।

बाँझपन का केस था अत: जननेंद्रियों का परीक्षण विशेष रूप से किया गया। डिंबकोश बिलकुल ठीक थे।

गर्भाशय को देखकर डॉ. लाट ने कहा, "है तो सर्वथा स्वस्थ लेकिन कुछ बड़ा नहीं लग रहा ?"

'हाँ, थोड़ा-सा तो लग रहा है।' सहयोगी डॉक्टर ने कागज पर नोट करते हुए सहमति व्यक्त की।

गर्भाशय को काट कर खोला गया। अंदर महीन स्पंजनुमा तंतुओं का गुच्छा-सा था जिसे तीनों डॉक्टर आश्चर्य से देखने लगे। डॉ. लाट ने पूछा, 'यह क्या है ?'

सहयोगी ने उत्तर दिया, "मालूम नहीं साहब, कोई विल्लस ट्यूमर लगता है। शायद इसी के कारण बाँझ रही हो।"

डॉ. लाट ने गर्भाशय को पैथोलोजी विभाग में भेजने के आदेश दिए।

शव परीक्षा खत्म होने पर उन्होंने कर्मचारी से कहा, "ठीक से सिलाई और अच्छी तरह से साफ कर जल्दी बॉडी दे देना।"

दूसरे रोज डॉ. लाट के पास पैथोलोजी के प्रोफेसर डॉ. चौबे का फोन आया।

"कल पोस्टमार्टम किया वह क्या केस था?" फोन पर डॉ. चौबे ने पूछा।

"एल्यूमीनियम फोसफाइड की गोली खाकर आत्महत्या का। स्त्री बाँझपन से दुखी थी। गुस्से में पति ने कुछ कड़वी बात कह दी और तैश में औरत ने गोली खा ली।" डॉ. लाट ने बताया।

'कुछ कर नहीं रहे तो पाँच मिनट के लिए यहाँ आओ।' डॉ. चौबे ने कहा तो 'अभी आया' कहकर डॉ. लाट उठ खड़े हुए। सहयोगी डॉक्टर भी साथ हो लिये। लेब में डॉ. चौबे सफेद कोट पहने बैठे थे। पास में टेक्नीशियन और डॉक्टर खड़े थे। एक ट्रे में वही स्पंजनुमा तंतुओं का गुच्छा रखा था जो गर्भाशय में मिला था।

उनके पहुँचते ही डॉ. चौबे ने कहा, "बाँझपन की बात इन लोगों को मालूम नहीं है, जरा इन्हें भी बता दो।"

सहयोगी डॉक्टर बता रहा था तो पैथोलोजी विभाग के काफी डॉक्टरों के चेहरे पर घोर आश्चर्य का भाव देखकर डॉ. लाट सकपका गए । उन्होंने प्रश्नसूचक नजरों से डॉ. चौबे की ओर देखा।

डॉ. चौबे ने बिना कुछ बोले ही फोरसेप्स उठाई और उस गोल गुच्छे में लगाए गए नस्तर के किनारों को अलग हटा दिया।

जो दिखा उसे देखकर डॉ. लाट और उनके सहयोगी डॉक्टरों के मुँह आश्चर्य से खुले रह गए। गुच्छे के अंदर के कोने में था नन्हा-सा एक महीने का गर्भस्थ भ्रूण और जिसे वे जालनुमा ट्यूमर समझे थे वह था गर्भ के चारों ओर का आवरण जिससे गर्भ गर्भाशय से जुड़ा रहता है।

- डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

मेहंदीपुर बालाजी में होगा श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ

मेहंदीपुर बालाजी (नि.सं.)। विश्वविख्यात सिद्धपीठ आस्था धाम मेहंदीपुर बालाजी के बालाजी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष पीठाधीश्वर श्री महंत नरेश पुरी महाराज की अध्यक्षता एवं पावन सानिध्य में विशाल राधा कृष्ण जी के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा व श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन समस्त भक्त जनों के सहयोग से होने जा रहा है। संस्कृत कॉलेज के पीछे पिछले एक महा से भागवत पांडाल को तैयार किया जा रहा था। जो अब बनकर पूरी तरह तैयार हो गया है।

भागवत कथा के लिये सजा मेंहदीपुर बालाजी धाम।

भागवत कथा पंडाल सहित पूरे बालाजी मंदिर, राम मंदिर सहित सभी मंदिरों को भव्य तरीके से सजाया जा रहा है । पाटोली बाईपास से लेकर मेहंदीपुर बालाजी मंदिर तक रंगीन रंग बिरंगी लाइट लगाई गई हैं।

बालाजी मंदिर से लेकर बालाजी मोड़ तक व सभी धर्मशालाओं को भी रंगीन लाइटों से सजाया जा रहा है। 22 जनवरी को विशाल कलश यात्रा पाटोली बाईपास से शुरू होगी कार्यक्रम को लेकर स्थानीय लोगों में भी काफी उत्सुकता है । सात दिनों तक प्रसिद्ध भागवताचार्य मृदुल कृष्ण महाराज जी के मुखारविंद से होने वाली भागवत कथा शाम 6:00 बजे से रात्रि 9:00 तक होगी जिसमें विश्ववख्यात कलाकारों द्वारा अलग-अलग दिन भजनों की प्रस्तुति दी जायेगी। यहां जगह-जगह प्रवेश द्वार भी लगाए गए हैं। कार्यक्रम में राजस्थान सहित अनेकों राज्यों से भी लोग पहुंचेंगे। भागवत कथा के पोस्टर भी जगह-जगह लगाए जा रहे हैं ।22 जनवरी को श्रीमद् भागवत कथा की कलश यात्रा में प्रसिद्ध धर्मगुरु भी शामिल होंगे। कलश यात्रा के दौरान महाभारत में श्रीकृष्ण की भूमिका निभाने वाले नीतीश भारद्वाज, धर्मगुरु रविशंकर महाराज अयोध्या हनुमानगढ़ी के मुख्य पुजारी राजू दास महाराज, उज्जैन महाकालेश्वर मंदिर के मुख्य पुजारी सहित बड़ी संख्या में धर्मगुरु कलश यात्रा में शामिल होंगे।

देश छोड़कर भागती प्रतिभाओं को कौन रोकेगा?

रामगोपाल जाट

पिछले दिनों एक आंकड़ा सामने आया कि भारत से हर दिन 550 युवा देश छोड़कर दूसरे देशों में बस रहे हैं। इस आंकड़े को 365 से गुणा कर लिया जाये तो संख्या 2,00,750 हो जाती है। पिछले साल आईएमएफ की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत, चीन जैसे देशों से उद्योगपति अपना देश छोड़कर स्थाई रूप से दूसरे देशों में बस रहे हैं। भारत से यह संख्या करीब 5 लाख सालाना बताई गई थी, जिनको बेहतर औधोगिक वातावरण नहीं मिलने, टैक्स अधिक होने और सिंगल विंडो की सुविधा के अभाव में ऐसे देशों में जाना पड़ रहा है, जहां पर सुविधाएं कारोबार के अनुकूल होती हैं। सोचनीय बात यह है कि उनका पसंदीदा स्थल अमेरिका या ब्रिटेन नहीं हैं, जो अकसर काफी समृद्ध माने जाते हैं, बल्कि ये लोग सिंगापुर और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में बस रहे हैं।

सवाल यह उठता है कि जो देश अगले चार साल में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने का दम भर रहा है, ऐसे देश की बड़ी प्रतिभाएं विदेश क्यों भाग रही हैं? हर दिन जो 550 युवा देश छोड़ रहे हैं, वे ऐसे हैं, जिनको उच्च अध्ययन के उपरांत अपना भविष्य बनाने की चिंता है। उनको ऐसा लगता है कि भारत में रहकर वे अपनी प्रतिभा के साथ ठीक से न्याय नहीं कर पायेंगे। जनसंख्या बहुत अधिक होने के कारण क्या अपनी बहुमुखी प्रतिभाओं को विदेश जाने के लिये मजबूर किया जाये ।

क्या इसीलिये आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया का दम भरा जाता है, कि वैश्विक व्यापारी भारत में आकर व्यापार करे कि हमारी प्रतिभाएं जब काम करने की स्थिति में आईं तो विदेश भाग गईं? क्या यह अति सोचनीय विषय नहीं है कि जो देश आज सामाजिक, सांस्कृतिक और सभ्यता के स्तर पर दुनिया को नेतृत्व देने की स्थिति में दिखाई देने लगा है, जिस देश के पास अपनी पुरातन संस्कृति की अकूत संपदा मौजूद है, उसकी नव प्रतिभाएं जब सेवाएं देने का समय आये, तब ऐसे देश में चली जायें, जहां उनका कोई रिश्ता-नाता नहीं है?

इन प्रश्नों का उत्तर देश की केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, उच्च जिम्मेदार अधिकारियों और बुद्धिजीवी लोगों की तरफ से मिलना चाहिये, क्योंकि इन्हीं के उपर इस बात की जिम्मेदारी है कि देश का युवा, जो वर्कफॉर्स बनने की स्थिति में देश छोड़कर नहीं भागे, उसको यहीं पर उचित संसाधन और अपनी प्रतिभा दिखाने, देश के विकास में भागीदार बनने का अवसर मिले। आज भारत को जरूरत इस बात की है कि अधिक से अधिक डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक और उद्योगपति विकास के लिये यहीं रहें और यहीं पर अपनी प्रतिभा से दुनिया को चकित करें।

जब भारत हर दिन अपनी 550 प्रतिभाएं खोयेगा, तो एक दिन ऐसा भी आ जायेगा, जब हमारे पास केवल द्वितीय या तृतीय स्तर की प्रतिभाएं बचेंगी, बाकी एक नंबर की सभी प्रतिभाएं उन देशों में सेवाएं दे रही होंगी, जिनका उनका निखारने में कोई योगदान नहीं था। अत: सरकारों को चाहिये कि जो युवा भारत में ही अपना उद्योग लगाना चाहता है, डॉक्टर बनकर देश सेवा करना चाहता है, शिक्षक बनकर देश का भविष्य बनाना चाहता है या इंजीनियर बनकर भारत के निर्माण में अपना योगदान देने की इच्छा रखता है, उसको उचित और सम्पूर्ण संसाधन सरकार के स्तर पर उपलब्ध करवाये जायें, ताकि उसकी प्रतिभा की असामयिक मृत्यु ना हो ।

यह बात सही है कि हम आंत्रपन्योरशिप के स्तर पर दुनिया को चकित कर रहे हैं, केंद्र सरकार भी अपनी पीठ थपथपाती है और जब कोई नया कारोबारी अपने दम पर शिखर को छूता है तो सरकारें खुद का किया बताने लगती हैं। तब यह वास्तविकता भी देख लेनी चाहिये कि हर दिन 550 युवा नये कारोबारी विदेश में क्यों बस जाने को बेबस हैं? जब हम यह दावा करते हैं कि अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों में सर्वाधिक डॉक्टर-वैज्ञानिक भारत के सेवाएं दे रहे हैं, तब यह भी ध्यान रखना होगा कि नये युवाओं को विदेश जाने से रोकने के उचित और सम्पूर्ण उपाय कैसे किये जायें?

इंटरनेट के इस जमाने में हम बहुत कुछ एक बटन दबाकर हासिल कर सकते हैं। धन होने पर कुछ भी खरीदने की क्षमता भी हमें मिल जाती है। किंतु जब बात युवाओं देश छोड़ने और उनकी प्रतिभा को उचित अवसर नहीं मिलने की आती है, तब उनको बचाने की बेहद आवश्यकता महसूस होती है। आज भारत के पास टाटा, बिडला, महेंद्रा, अडानी, अंबानी जैसे उद्योग घराने हैं, लेकिन ये सब अपने दम से यहां तक पहुंचे हैं। इनको कोई सरकार मदद देकर बड़ा नहीं बना पाई है। अन्यथा इनके जैसे जाने कितने प्रतिभाशाली लोग या तो देश छोड़कर चले गये या यहीं पर संसाधनों के अभाव में घुट-घुटकर दम तोड़ चुके हैं। हमारा लाचार और भ्रष्ट सरकारी तंत्र तो वैसे ही प्रतिभा की हत्या करने को हमेशा तैयार रहता है। ऐसे में जो नये कारोबारी पनप रहे हैं, जो अपने दम पर पढ़-लिखकर वैज्ञानिक या डॉक्टर बनकर विदेश जा रहे हैं, उनको रोकना, उनको उचित संसाधन उपलब्ध करवाना और एक ऐसा वातावरण तैयार करना आवश्यक है, जिसके कारण ये लोग भारत को ही अपना सब कुछ माने और यहीं पर अपना भविष्य देखें, उसको संवारें, देश की सेवा में अपना योगदान करें और नई प्रतिभाओं के लिये रॉल मॉडल बन सकें।

- रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 18 जनवरी, 2023

माघ मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, अनुराधा नक्षत्र सांय 5:23 तक, वृद्धि योग ात्रि 2:56 तक, बालव करण सांय 4:03 तक, चन्द्रमा वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से सांय 5:23 तक है। राजयोग सांय 4:30 से सांय 5:23 तक है। आज बुध मार्गी सांय 6:40 पर होगा। आज षटतिला एकादशी व्रत है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:59 तक, शुभ 11:18 से 12:37 तक, चर 3:15 से 4:34 तक, लाभ 4:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:52

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कर्क
परिजनों का व्यवहार अच्छा नहीं रहेगा। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।